श्री युगल सरकार की आरती

आरती प्रीतम प्यारी की, कि बनवारी नथवारी की ।

दुहुँन सिर कनक-मुकुट झलकै,
दुहुँन श्रुति कुण्डल भल हलकै,
दुहुँन दृग प्रेम-सुधा छलकै,
चसीले बैन, रसीले नैन, गँसीले सैन,
दुहुँन मैनन मनहारी की, कि बनवारी नथवारी की । आरती....

दुहुँन दृग-चितवनि पर वारी,
दुहुँन लट-लटकनि-छवि न्यारी,
दुहुँन भौं-मटकनि अति प्यारी,
रसन मुख पान, हँसन मुसकान, दसन दमकान,
दुहुँन बेसर छवि न्यारी की, कि बनवारी नथवारी की । आरती....

एक उर पीताम्बर फहरै,
एक उर नीलाम्बर लहरै,
दुहुँन उर लर-मोतिन छहरै,
कंकनन खनक, किंकिनिन झनक, नूपुरुन भनक,
दुहुँन रुनझुन धुनि प्यारी की, कि बनवारी नथवारी की । आरती....

एक सिर मोर-मुकुट राजै,
एक सिर चूनरि-छवि छाजै,
दुहुँन सिर तिरछे भल भ्राजै,
संग ब्रज बाल, लाड़िली - लाल, बाँह गल डाल,
'कृपालु' दुहुँन दृग चारी की, कि बनवारी नथवारी की । आरती....

भावार्थ

हम प्रियतम श्यामसुन्दर एवं प्यारी श्री किशोरी जी की आरती करते हैं ।

दोनों के सिर पर स्वर्ण के मुकुट चमक रहे हैं, दोनों के कानों में सुन्दर कुण्डल हिल रहे हैं,दोनों की आँखों से प्रेमामृत छलक रहा है । दोनों की वाणी अत्यन्त मधुर है । दोनों के नेत्र अत्यन्त सरस हैं । दोनों के कटाक्ष अत्यन्त ही तीखे हैं । दोनों कामदेवके मन को भी हरने वाले हैं ।

हम दोनों के परस्पर देखने पर बलिहार जाते हैं । दोनों के घुँघराले बालों की छटा अत्यन्त ही निराली है । दोनों की भौंहों के चलने की रीति अत्यन्त ही आकर्षक है । दोनों के मुख में पान का रस है । दोनों का हँसना, मुसकाना मनमोहक है । दोनों के दाँतों की चमक अत्यन्त सुंदर है, दोनों के बेसर की झाँकी तो अत्यन्त ही निराली है ।

श्यामसुन्दर के वक्षःस्थल पर पीताम्बर फहरा रहा है, किशोरी जी के वक्षःस्थल पर नीलाम्बर लहरा रहा है, तथा दोनों के वक्षस्थलपर मोतियों की लड़ियाँ झूम रही हैं । दोनों के कंकण, दोनों की किंकिणि एवं दोनों के नूपुर की रुनझुन ध्वनि अत्यन्त ही मनोहारिणी है ।

श्यामसुन्दर के शीश पर मोर मुकुट सुशोभित है, किशोरीजी के शीश पर सुंदर चुनरी शोभायमान है, एवं दोनों के सिर तिरछे होकर परस्पर मिले हुए शोभा दे रहे हैं । 'कृपालु' जी महाराज कहते हैं कि श्यामसुन्दर एवं किशोरी जीग ले में परस्पर बाँहें डाले हुए हैं । समीप में ही ब्रजाङ्गनाएँ खड़ी हैं, एवं प्रिया प्रियतम एक दूसरे की ओर कटाक्ष पात करते हुए देख रहे हैं ।